भवानीप्रसाद मिश्र (23 मार्च, 1913 - 20 फरवरी, 1985)

भवानीप्रसाद मिश्र जी ने शब्दों को ही सार्वजनिक ताकत माना है। उनका मानना था कि "शब्दकार को अगर जरूरत पड़े तो उसे अपने शब्दों पर मरना चाहिए।" बोलचाल की भाषा को कविता में साधकर उन्होंने सहजता और संप्रेषणीयता का नया प्रतिमान गढ़ा। उनकी भरसक कोशिश यही रही कि दर्शन में अद्वैत और तकनीकी में सहज लक्ष्य ही उनके बन जाएं। अपनी रचनाधर्मिता के तहत मिश्र जी कभी प्रकृति के सौन्दर्य के गायक बनकर उभरते हैं, कभी अनास्था के बीच आस्था का दीपक जलाते हैं, कभी चेतना के नये स्वरों को उद्घाटित करते हैं तो कभी चिंतन के नये आयामों को छूते हैं। मिश्र जी का काव्य गांधी जी के जीवन दर्शन से अनुप्राणित हैं। उन्होंने गांधीवाद को कविता की अंर्तधारा के बीच से उपजाया। प्रेम, करूणा, अहिंसा, सर्वोदय जैसे मूल्य उनकी कविताओं ने स्थापित किए। **उनकी प्रमुख रचनाएं हैं:** - गीतफरोश, अंधेरी कविताएं, गांधी पंचशती, बुनी हुई रस्सी, इदं न मम्, शरीर कविता, फसलें व फूल, मानसरोवर दिल तथा तूस की आग।